सूरह — एक कहानी

सूरह अल-हदीद

लोहा

पूरा सफ़र — उसकी सोहबत से लोहे की ताक़त तक —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 57 • 29 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

हुवल्-अव्वलु वल्-आख़िरु वज़्-ज़ाहिरु वल्-बातिन

3. वही अव्वल है और आख़िर, और ज़ाहिर है और बातिन।

व हुव म'अकुम ऐन मा कुन्तुम

4. और वो तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो।

अलम य'निल्-लिल्-लज़ीन आमनू अन तख़्शा-अ कुलूबुहुम लि-ज़िक्रिल्-लाह

16. क्या ईमान वालों के लिए वो वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के सामने झुक जाएँ?

व मा अम्वालुल्-हयातिद्-दुन्या इल्ला मता'उल्-ग़ुरूर

20. और दुनिया की ज़िंदगी का सामान तो बस धोके का सामान है।

लि-कैला त'असौ 'अला मा फ़ातकुम व ला तफ़रहू बिमा आताकुम

23. ताकि तुम उस पर ग़म न करो जो तुमसे छूट गया, और उस पर इतराओ न जो उसने तुम्हें दिया।

व अन्ज़ल्नल्-हदीद फ़ीहि ब'सुन शदीदुंव्-व मनाफ़ि'उ लिन्-नास

25. और हमने लोहा उतारा, जिसमें सख़्त ताक़त है और लोगों के लिए फ़ायदे।

चार नाम और पाँच लफ़्ज़

बेटा, ये सूरह उन सूरहों के ख़ानदान को खोलती है जो तस्बीह से शुरू होती हैं — '**सब्बह लिल्लाह**' — जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है अल्लाह की **तस्बीह** करता है। आप के ज़िक्र में शामिल होने से पहले ही, ज़िक्र चल रहा था: हर पत्ता, हर लहर, हर सितारा, अपनी अपनी ज़ुबान में। जब आप 'सुब्हानअल्लाह' कहते हैं, बेटा, आप कुछ शुरू नहीं कर रहे — **आप कायनात की सबसे पुरानी, सबसे बड़ी महफ़िल में शामिल हो रहे हैं।**

फिर **चार नाम** आते हैं जिन्हें उलमा अल्लाह के अपनी किताब में सबसे अज़ीम ता'आरुफ़ में शुमार करते हैं: 'वो **अल-अव्वल** है — पहला, जिस से पहले कुछ न था। और **अल-आख़िर** — आख़िरी, जिस के बाद कुछ नहीं। और **अज़्-ज़ाहिर**

— ज़ाहिर, जिस से ऊपर कुछ नहीं। और **अल-बातिन** — पोशीदा, हर चीज़ से क़रीब, जिसे कोई आँख नहीं पाती।' नबी ﷺ ख़ुद इन चार नामों से दुआ करते जब सोने के लिए लेटते।

और फिर, **पाँच लफ़्ज़** जो अपनी ज़िंदगी के हर रास्ते पर साथ ले जाएँ: '**व हुव म'अकुम ऐन मा कुन्तुम** — और वो तुम्हारे **साथ** है, जहाँ भी तुम हो।' इम्तिहान के हॉल में और आई-सी-यू के इंतिज़ार-गाह में, भीड़ी लोकल ट्रेन में और तीन बजे के ख़ाली फ़्लैट में — **उसकी मईयत, उसकी सोहबत, कभी डिस्कनेक्ट नहीं होती।** इन पाँच लफ़्ज़ों को जज़्ब कर लीजिए, बेटा, और दो चीज़ें ना-मुमकिन हो जाती हैं: **मुकम्मल मायूसी, और पुर-सुकून गुनाह।**

आप सिर्फ़ अमानत-दार हैं

फिर सूरह एक मुतालबा करती है — मगर सुनिए **कैसे** इसे अल्फ़ाज़ देती है, क्योंकि अल्फ़ाज़ हर उज़्र घोल देते हैं: 'अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और उस में से **ख़र्च** करो जिसमें उसने तुम्हें **मुस्तख़्लफ़ीन** बनाया — **अमानत-दार, जाँ-नशीन।**'

'अपने माल से ख़र्च करो' नहीं, बेटा — **उस माल से ख़र्च करो जिसे तुम सँभाल रहे हो।** तुम्हारे अकाउंट का हर रुपया किसी पहले मालिक का था और किसी अगले के लिए पहले से बुक्ड है; **तुम अमानत-दारों की एक रिले की एक कड़ी हो।** कंजूस का फ़रेब मिल्कियत है; देने वाले की वज़ाहत अमानत-दारी है।

और फिर अल्लाह — तमाम ख़ज़ानों का मालिक — अपनी अज़मत को एक हैरत-अंगेज़ जुमले में झुका देते हैं: '**वो कौन है जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे**, ताकि वो उसे उसके लिए कई गुना कर दे, और उसके लिए एक बा-इज़्ज़त अज्र है?' **मालिक बंदे से वो उधार लेता है जो पहले से मालिक का ही है — सिर्फ़ इसे कई गुना कर के लौटाने के लिए।**

और एक बारीक इंसाफ़ आता है: जिन्होंने फ़तह से **पहले** ख़र्च किया और जद्दो-जहद की वो उन के बराबर नहीं जो बाद में — 'वो **दर्जे में बड़े** हैं' — क्योंकि

मुश्किल, धुँधले दिनों में देना उस से ज़्यादा भारी है जब भीड़ पहले ही तालियाँ बजा रही हो। जल्दी दो, बेटा; हिम्मत पर मिलने वाली छूट फिर नहीं लौटती।

दौड़ते नूर का दिन

अब सूरह आख़िरी दिन का एक मंज़र दिखाती है जो तय कर दे कि आप यहाँ अपनी रातें कैसे ख़र्च करते हैं। मोमिन मर्द और मोमिना औरतें — 'उनका **नूर** उनके **आगे** और उनके **दाएँ** दौड़ता होगा': हर रूह अपने अमल से रोशन, अँधेरे को उस चमक पर पार करती जो उसने दुनिया में बाँधी।

और उनके पीछे, मुनाफ़िक़ — जो उन्हीं सफ़ों में नमाज़ पढ़ते, उन्हीं महफ़िलों में आते थे — पुकारते हुए: '**हमारे लिए ठहरो! हमें अपना कुछ नूर उधार दे दो!**' और जवाब आता है: '**पीछे लौट जाओ और नूर वहाँ तलाश करो जहाँ नूर बनाया गया था।**' फिर उन के दरमियान एक **दीवार** खड़ी कर दी जाती है, जिसमें एक दरवाज़ा है — उसकी अंदर वाली तरफ़ रहमत, बाहर वाली तरफ़ अज़ाब। उस में से वो फ़रियाद करते हैं: '**क्या हम तुम्हारे साथ न थे?**' 'हाँ,' जवाब आता है, 'मगर तुमने अपने नफ़्स को आज़माइश में डाला, और तुम **ठहरे** रहे, और तुमने **शक** किया, और **तमन्नाओं** ने तुम्हें धोका दिया — यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया।'

उनकी **चार बीमारियाँ** आहिस्ता पढ़िए, बेटा — नफ़्स की फ़ितना, ताल-मटोल, शक, और लंबी तमन्नाएँ — क्योंकि ये आज कशिश-दार पैकेटों में बिकती हैं: '**अभी एन्जॉय करो, तौबा बाद में।**'

और इसे दिल में जला लो: **उस दिन, नूर मुंतक़िल नहीं हो सकता।** किसी बाप का नूर बेटे को नहीं ढाँपता; किसी शैख़ का नूर मुरीद को नहीं। **पावरबैंक इस दीवार की इस तरफ़ ही चार्ज करना होगा।**

क्या वक़्त नहीं आया?

और अब, बेटा, आहिस्ता चलिए — हम इस सूरह के दिल वाली आयत के क़रीब पहुँच रहे हैं, एक ऐसी आयत जिसने हमारे दिलों से सख़्त दिलों को चाक किया है: '**अलम

य'निल्-लिल्-लज़ीन आमनू** — **क्या** ईमान वालों के लिए वो **वक़्त नहीं आया**, कि उनके दिल अल्लाह की याद और उस हक़ के सामने **झुक** जाएँ जो उतरा है? और ये कि वो उन जैसे न हो जाएँ जिन्हें पहले किताब दी गई — उन पर **लंबी मुद्दत गुज़री, तो उनके दिल सख़्त हो गए** — और उन में से बहुत से ना-फ़रमान हैं।'

इब्ने मसऊद (रज़ि0) ने फ़रमाया: हमारे इस्लाम क़ुबूल करने और अल्लाह के इस आयत से हमें तंबीह करने के दरमियान सिर्फ़ **चार** साल गुज़रे। **सहाबा — चार साल में — उन से पूछा जा रहा है 'क्या वक़्त नहीं आया?'** फिर हमारा क्या, बेटा, अपने इस्लाम के दस, बीस, चालीस साल बाद, अज़ान के बग़ल से स्क्रॉल करते हुए?

और फिर अल्लाह उस सख़्त दिल का **इलाज** देते हैं, फ़ौरन अगली आयत में: '**इ'लमू अन्नल्लाह युह्यिल्-अर्ज़ ब'अ्द मौतिहा** — **जान लो कि अल्लाह ज़मीन को उसके मरने के बाद ज़िंदा करता है।** क़द बय्यन्ना लकुमुल्-आयाति ल'अल्लकुम त'अ्क़िलून — हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोल दीं, ताकि तुम समझो।'

बेटा, इस जोड़ी की ख़ूबसूरती देखिए। पहले वो कहते हैं: तुम्हारे दिल सख़्त हो सकते हैं। फिर फ़ौरन: **मैं मुर्दा ज़मीन को ज़िंदा करता हूँ।** यानी: **मायूस मत हो।** वो पथरीला खेत जिस पर सालों से कुछ नहीं उगा — एक बारिश उसे हरा कर देती है। और वही ज़ात दिलों की बारिश भी बरसाती है: एक आयत, एक जनाज़ा, एक रात की नमाज़, एक सच्चा आँसू — और जो सख़्त था वो नरम पड़ने लगता है।

कोई दिल इतना सख़्त नहीं जो उस बारिश से बाहर हो, बेटा — बस उसे माँगना पड़ता है।

खेल, तमाशा, और बारिश वाली मिसाल

फिर सूरह दुनिया की एक ऐसी तस्वीर खींचती है जो एक बार देख लेने के बाद उसका जादू तोड़ देती है: '**जान लो कि दुनिया की ज़िंदगी तो बस खेल है, और तमाशा, और ज़ीनत, और आपस में फ़ख़्र, और माल-ओ-औलाद में एक दूसरे से बढ़ने की होड़।**'

बेटा, उलमा ने कहा कि ये **इंसानी उम्र के मरहलों** की तरतीब है: बचपन **खेल**, जवानी **तमाशा**, फिर **ज़ीनत** (लिबास, गाड़ी, घर), फिर **फ़ख़्र** (मैं कौन हूँ, मेरा ख़ानदान), फिर **कसरत की होड़** (मेरे पास कितना है, मेरे कितने बेटे)। पूरी ज़िंदगी एक आयत में, और हर मरहला अगले से ज़्यादा भारी।

और फिर मिसाल: '**उस बारिश की तरह जिसकी उगाई हुई फ़सल किसानों को भा जाती है — फिर वो सूखने लगती है और तुम उसे ज़र्द होते देखते हो — फिर वो चूरा हो जाती है।**' सुब्हानअल्लाह, बेटा: वही खेत जिसकी हरियाली देख कर किसान का दिल भर आया था, चंद हफ़्तों में भूसा। **आपने कितनी बार किसी को 'सेट' होते देखा — और फिर वो ख़बर सुनी?**

'और आख़िरत में सख़्त अज़ाब है, और अल्लाह की तरफ़ से मग़फ़िरत और रज़ामंदी भी। **व मल्-हयातुद्-दुन्या इल्ला मता'उल्-ग़ुरूर** — और दुनिया की ज़िंदगी का सामान तो बस **धोके का सामान** है।'

और फिर हुक्म — और ये सिर्फ़ 'चलो' नहीं है: '**साबिक़ू इला मग़्फ़िरतिम्-मिर्-रब्बिकुम** — अपने रब की मग़फ़िरत की तरफ़ **एक दूसरे से आगे बढ़ो** — और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी चौड़ाई आसमान और ज़मीन की चौड़ाई जैसी है।' बेटा, वही होड़ जिसे उन्होंने दुनिया में मना किया, उसे यहाँ हुक्म बना दिया — **सिर्फ़ मैदान बदल दिया।**

पहले से लिखा हुआ — ताकि आप संतुलित रहें

और अब, बेटा, वो दो आयतें जो एक मुसलमान की पूरी नफ़्सियात तय कर देती हैं: '**मा असाब मिम्-मुसीबतिन फ़िल्-अर्ज़ि व ला फ़ी अन्फ़ुसिकुम इल्ला फ़ी किताबिम्-मिन क़ब्लि अन नब्र-अहा** — ज़मीन में या तुम्हारी अपनी जानों में कोई मुसीबत नहीं आती मगर वो एक **किताब में लिखी होती है, इस से पहले कि हम उसे पैदा करें** — बेशक ये अल्लाह पर आसान है।'

और अब मक़सद सुनिए — क्योंकि अल्लाह ने ये सिर्फ़ बताया नहीं, इसकी **वजह** भी बता दी: '**लि-कैला त'असौ 'अला मा फ़ातकुम व ला तफ़्रहू बिमा आताकुम** —

ताकि तुम उस पर ग़म न करो जो तुमसे छूट गया, और उस पर इतराओ न जो उसने तुम्हें दिया।'

बेटा, ये तक़दीर के अक़ीदे का असल फल है। ये आपको बे-हिस नहीं बनाता — ग़म फिर भी आता है, ख़ुशी फिर भी आती है। ये आपको **संतुलित** बनाता है: नुक़सान पर टूटते नहीं, क्योंकि जो गया वो कभी आपके लिए लिखा ही नहीं था; और मिलने पर फूलते नहीं, क्योंकि जो मिला वो आपकी होशियारी नहीं, उसका फ़ैसला था।

और फिर वो जोड़ देते हैं कि इस तवाज़ुन के बग़ैर आदमी का क्या हाल होता है: '**वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्ल मुख़्तालिन फ़ख़ूर** — और अल्लाह किसी इतराने वाले, फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता' — वो जो **बख़ील** भी होते हैं और लोगों को भी बख़ील बनने का हुक्म देते हैं।

लोहा — और वो रहबानियत जो उन्होंने ख़ुद गढ़ी

और अब सूरह का नाम आता है, बेटा। 'हमने अपने रसूलों को खुली दलीलों के साथ भेजा, और उनके साथ **किताब** और **मीज़ान** (तराज़ू) उतारा — **ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ायम रहें** — **व अन्ज़ल्नल्-हदीद** — और हमने **लोहा** उतारा, जिसमें **सख़्त ताक़त** है और लोगों के लिए **फ़ायदे**।'

तीनों को एक साथ देखिए: **किताब** (हिदायत), **तराज़ू** (इंसाफ़ का पैमाना), और **लोहा** (ताक़त)। क्योंकि, बेटा, हिदायत बग़ैर इंसाफ़ के ख़ुश्क है; इंसाफ़ बग़ैर ताक़त के बे-असर है। एक क़ौम को तीनों चाहिएँ: वो जाने कि सही क्या है, वो नाप सके, और वो उसे क़ायम रख सके।

और लोहे का बयान ग़ौर कीजिए: उसमें **'बासुन शदीद'** — सख़्त ताक़त — और **'मनाफ़िअ लिन्नास'** — लोगों के लिए फ़ायदे। वही धातु तलवार भी बनती है और हल भी; ज़ंजीर भी और पुल भी; बंदूक़ भी और ऑपरेशन का औज़ार भी। **लोहा ग़ैर-जानिबदार है, बेटा; उसे हाथ थामने वाले का ईमान इस्तेमाल तय करता है।**

और फिर: '**व लि-य'अ्लमल्लाहु मंय्-यन्सुरूहू व रुसुलहू बिल-ग़ैब** — ताकि

अल्लाह जान ले कि कौन बिन देखे उसकी और उसके रसूलों की मदद करता है।' यही असल इम्तिहान है: **बिन देखे।**

और सूरह के आख़िर में एक बहुत अहम तंबीह आती है, बेटा। अल्लाह नूह, इब्राहीम, और फिर ईसा (अलैहिमुस्सलाम) का ज़िक्र करते हैं, और उनके पैरोकारों के दिलों में रखी गई **राफ़त और रहमत** का — और फिर: '**व रहबानिय्यतनिब्तद'ऊहा मा कतब्नाहा 'अलैहिम** — और **रहबानियत** — उन्होंने उसे ख़ुद गढ़ लिया; हमने उसे उन पर फ़र्ज़ नहीं किया था — **इल्लब्तिग़ा-अ रिज़्वानिल्लाह** — सिवाए अल्लाह की रज़ा की तलब के — **फ़-मा र-'औहा हक़्क़ा रि'आयतिहा** — मगर उन्होंने उसका वो हक़ अदा न किया जो अदा करना चाहिए था।'

बेटा, इस आयत में दो सबक़ हैं। एक: **दीन में अपनी तरफ़ से चीज़ें मत गढ़िए** — चाहे नीयत अच्छी हो। दुनिया छोड़ देना, शादी छोड़ देना, ख़ुद को तकलीफ़ देना — अल्लाह ने ये कभी नहीं माँगा। और दो: **जो आपने ख़ुद अपने ऊपर लाज़िम कर लिया, उसे निभाना भी आसान नहीं** — उन्होंने ख़ुद बनाई, और फिर ख़ुद ही न निभा सके।

और सूरह इस पर ख़त्म होती है: 'ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ — वो तुम्हें अपनी रहमत में से **दोहरा हिस्सा** देगा, और तुम्हारे लिए एक **नूर** बनाएगा जिसमें तुम चलोगे, और तुम्हें बख़्श देगा।' **नूर, बेटा — वही जिसकी उन्होंने उस दीवार पर भीख माँगी थी। यहाँ माँगिए, ताकि वहाँ माँगना न पड़े। **

इस सूरह से क्या सीखा

1. जब आप तस्बीह करते हैं तो कुछ शुरू नहीं करते — आप कायनात की सबसे पुरानी महफ़िल में शामिल होते हैं।

2. 'वो तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो' — इन पाँच लफ़्ज़ों के साथ मुकम्मल मायूसी और पुर-सुकून गुनाह दोनों ना-मुमकिन हो जाते हैं।

3. आप मालिक नहीं, अमानत-दार हैं — और मुश्किल, धुँधले दिनों का देना बाद की तालियों वाले देने से भारी है।

4. उस दिन नूर उधार नहीं मिलता — पावरबैंक इसी तरफ़ चार्ज कीजिए; और चार बीमारियों से बचिए: नफ़्स की फ़ितना, ताल-मटोल, शक, लंबी तमन्नाएँ।

5. 'क्या वक़्त नहीं आया?' — और उसका इलाज ठीक अगली आयत में है: वो मुर्दा ज़मीन को ज़िंदा करता है, तो सख़्त दिल से मायूस मत होइए।

6. हर मुसीबत पैदा होने से पहले लिखी जा चुकी — ताकि आप छूटी चीज़ पर टूटें नहीं और मिली चीज़ पर इतराएँ नहीं।

7. किताब, तराज़ू और लोहा तीनों चाहिएँ — और दीन में अपनी तरफ़ से 'रहबानियत' मत गढ़िए।

या अव्वल, या आख़िर, या ज़ाहिर, या बातिन — हमारे दिलों को अपनी याद के सामने झुका दीजिए, हमें अपना नूर अता फ़रमाइए, और हमें उस दिन उधार माँगने वालों में मत रखिए। आमीन।